This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 7189

Unique Paper Code : 62055502 IC

Name of the Paper : जनपदीय साहित्य

Name of the Course : B.A. (P) Hindi CBCS (Generic)

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

(इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. जनपदीय साहित्य से आप क्या समझते हैं ? इसके विविध रूपों का संक्षिप्त परिचय दीजिये। 12

अथवा

हिंदी प्रदेश की जनपदीय बोलियों के साहित्य का सामान्य परिचय दीजिए।

2. 'संस्कार गीत' में मुख्यतः किन संस्कारों का वर्णन किया गया है ? 12

अथवा

श्रम संबंधी लोकगीतों की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

munotes.in

3. लोककथाओं से क्या अभिप्राय है ? किसी **एक** लोककथा का परिचय दीजिए। 12

अथवा

'आल्हा' और सारंगा' लोकगाथाओं का सामान्य परिचय दीजिए।

4. लोकनाट्य से क्या अभिप्राय है ? लोकनाट्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए। 12

अथवा

भिखारी ठाकुर कृत लोकनाट्य 'बिदेसिया' की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7+7

(क) मेहंदी तो बीवण धण गई छोटा देवर साथ,

..... मेहंदी रंगभरी जी राज

मन्ने तो बोइ एक क्यारी देवन नै बोया सारा खेत। मेहंदी ? .....

मैंने निनाणी एक क्यारी देवर नै निमाणा सारा खेत।

मेहंदी काटण मैं गई छोटा देवर नै काट्या सारा खेत।

मेहंदी ढोवण मैं गई छोटा देवर साथ मेहंदी रंगभरी जी राज।

मैंने रचाई एक आंगली देवर नै रचाए दोनूं हाथ.....।

अथवा

सूतल सँइया के जगावै हो रामा, तोरी मीठी बोलिया॥

रोज-रोज बोले कोइली साँझ सबेरवा

आजु काहे बोले अधिरतिया हो रामा, तोरी मीठी बोलिया॥

अबले त रहू कोइली बने कोइलिया

अब तुहूँ भइलू सवतिनिया हो रामा, तोरी मीठी बोलिया॥

होखे द बिहान कोइली, बढ़ई बोलइबो

जरी से कटइबो सिरिसया हो रामा, तोरी मीठी बोलिया॥

(ख) गंगा जी आई तौ भगवान बोले कि सुना है कि तुम सबके पाप इकट्ठा करि रही हो ? गंगा बोलीं-भला हम पापन का एकट्ठा करिके का करिवे। हम तौ पापन का धोयके बहाय देइत है। सब पाप समुद्दर लइ जात है। गंगा कै बात सुनिकै भगवान तुरतै बरुण देउता का बोलवाय पठएनि। बरुण देवतौ आयगे। तब भगवान बोले कि बरुण जी ! सुना है, तुम सबै मनइन के पाप एकट्ठा करि रहे हो। बरुण बोले-हम का करी भगवान ? ई गंगा जी सबके पाप धोय लउती है औ हमरे ह्यन छाँड़ि जाती हैं।

munotes.in

अथवा

राजा बोल्यो–'आपणे तो पाणी काडो घोडाँ ऊठाँ तांई।' जको सागे छोटो सो चढ़त हो, अब सिक्का पाणी काटण ल्याग्या। सो काछवो पाणी पर तिरहो। जको चड़स में आगो, जणा लोग मार गेरयो। जणा रिसालदार बोल्यो–'घोडाँ के मेखां रोपो, मेख ठोकीर पाटडोगो बार नीसर के भाजी। जणा बीनें बी सारली, आर बठेई गेरेदी, राजा चल्यो गो।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : 7,6

(1) लोककथा

(2) मौखिक साहित्य

(3) भांड का स्वरूप

(4) कठपुतली।

munotes.in